भारत में यूरोपियों का आगमन

- भारत के साथ यूरोप का व्यापारिक संबंध यूनानी युग से ही था। आधुनिक युग में पुर्तगाल एवं स्पेन ने कदम उठाया। वर्ष 1494 ई. में स्पेन का यात्री कोबलंबस भारत को खोजने के लिये निकला था,परन्तु अमेरिका की खोज कर दिया। 1448 ई. में पुर्तगाल की यात्री 'वास्को-डि-गामा' ने भारत का एक नया समुद्री मार्ग खोज निकाला। वास्को-डी-गामा अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप (अफ्रीका के सुदूर दक्षिणी कोने पर एक स्थान) होते हुए अफ्रीका का पूरा चक्कर लगाकर कालीकट(केरल) बंदरगाह बहुँचा। इसी के साथ भारत में निम्न कम्पनियां क्रामिक रूप में भारत आई –
  1. पुर्तगीज – एस्तादो द इंडिया
  2. डच – वेरिंगिदे ओस्त इण्डिशे कंपनी
  3. अंग्रेज – ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी
  4. डेन – डेन ईस्ट इंडिया कंपनी
  5. फ्रांसीसी

पुर्तगीज

- प्रथम पुर्तगीज तथा यूरोपीय यात्री वास्कोडिगामा 90 दिन की समुद्री यात्रा के बाद 'अब्दुल मनीक' नामक गुजराती पथ-प्रदर्शक की सहायता से 1498 ई. में कालीकट(केरल),भारत के समुद्र तट पर उत्तरा।
- कालीकट के शासक जमोरिन ने वास्कोडिगामा का स्वागत किया। लेकिन पहले से उपस्थित अरब यात्रियों ने विरोध किया।
- वास्कोडिगामा ने काली मिर्च व्यापार से 60 गुना अधिक मुनाफा कामाया।
- पुर्तगाली समुद्री व्यापार को एस्तादों द इंडिया नाम दिया गया।
- पुर्तगाली व्यापार को एस्तादों द इंडिया नाम दिया गया।
- पुर्तगाली उपनिवेश का प्रथम वायसराय भारत में था, फ्रांसिस्को द अल्मीडा था।
- पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थाक आल्बुकर्क था।
- पुर्तगालियों ने भारत में प्रथम दुर्ग का निर्णाण कोचीन में किया।
- मध्यकाल में सर्वप्रथम भारत में व्यापारिक संबंध पुर्तगाल ने स्थापित किया था। भारत में प्रथमतः सामुद्रिक केंद्र पुर्तगालियों ने स्थापित किया।
- अल्बुकर्क ने 1510 ई. में बीजापुर के शासक आदिलशाह युसुफ से गोवा छीन लिया जो कालांतर में पुर्तगीज व्यापारिक केंद्रों की राजधानी बनाई गई।
- सैंनथोमा (मद्रास), हुगली (बंगाल) द्वीप (काठियावाड़) में पुर्तगीज बस्तियों की स्थापना की गई।
- पांडिचेरी पर कब्जा करने वाली पहली यूरोपीय शक्ति पुर्तगाली थे। हुगली को बंगाल की खाड़ी में समद्री लूटपाट के लिए पुर्तगालियों ने अड्डा बनाया था।
- भारत में पुर्तगाली सबसे पहले 1498 में आये और सबसे अंत में 1961 ई. में वापस गये।

डच

- 1602 ई. में डच (हॉलैंड) संसद द्वारा पारित प्रस्ताव से एक संयुक्त डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई। इस कम्पनी को डच संसद द्वारा 21 वर्षो के लिए भारत और पूरब के देशों के साथ व्यापार करने,आक्रमण और विजय करने के संबंध में अधिकार पत्र प्राप्त हुआ।
- भारत में शीघ्र ही वेरिंगदे ओस्त इंडिसे कंपनी ने मसाला व्यापार पर एकधिकार प्राप्त कर लिया।
- डचों ने पुर्तगालियों को पराजित किया और आधुनिक कोच्चि में उन्होंने पोर्ट विलियम का निर्माण किया।

- डचों ने1605 ई. में मुसलीपट्टम में प्रथम डच कारखाने की स्थापना की। डच भारत से नील, शोरा और सूत्री वस्त्र बन गया। यहां पर डचों ने गुस्तावुल नाम के किले का निर्माण कराया।
- डचों ने स्वर्ण निर्मित 'पैगोडा सिक्के' का प्रचलन करवाया।

डेन

- डेनमार्क की ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1616 ई. में हुई, इस कंपनी ने 1620 में त्रैंकोबार(तमिलनाडु) तथा 1676 ई. में सेरामपुर (बंगाल) अपनी व्यापारिक कंपनियां स्थापित की। सेरामपुर डेनों का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था।
- 1854 ई. में डेन लोगों ने अपनी वाणिज्यिक कंपनी को अंग्रेजों के बेच दिया।

फ्रांसीसी

- अन्य यूरोपीय कंपनियों की तुलना में फ्रांसीसी भारत में देर से आये। लुई चौदहवें फ्रांस के सम्राट के शासनकाल में 1664 ई. में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई, जिसे कम्पनी डेस इंडेस आरियंटलेस कहा गया। फ्रांस की व्यापारिक कंपनी को राज्य द्वारा विशेषाधिकार तथा वित्तीय संसाधन प्राप्त था। अतः इसे सरकारी व्यापारिक कंपनी कहा जाता था। कोल्बर्ट को फ्रांसीसी कपंनी का संस्थापक मानते हैं।
- 1668 ई. में सूरत में पहले व्यापारिक कारखाने की स्थापना की।
- 1669 ई. में मरकारा ने गोलकण्डा से सुल्तान से अनुमति प्राप्त कर मुसलीपट्नम में दूसरी फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1674 ई. में बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खां द्वारा फ्रांसीसियों को प्रदत्त स्थान पर 1690-02 ई. को चन्द्रनगर की स्थापना की गई।
- डचों ने अंग्रेजों की सहायता से 1693 ई. में पांडिचेरी को छीन लिया लेकिन 1697 ई. में सम्पन्न रिजविक की संधि के बाद पांडिचेरी पुनः फ्रांसिसियों को प्राप्त हो गया।
- 1701 ई. पांडिचेरी को पूर्व में फ्रांसीसी बस्तियों का मुख्यालय बनाया गया और मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी मामलों का निदेशक बनाया गया। इसने पांडिचेरी के कारखाने में फार्ट लुई की स्थापना की।
- 1731 ई. में चंद्रनगर के प्रमुख के रूप में फ्रांसीसी गर्वनर डुप्ले को नियुक्त किया गया। डुप्ले प्रथम यूरोपीय था जिसने भू-क्षेत्र अर्जित करने के उद्देश्य से भारतीय राजाओं के झगड़ों में भाग लेने की नीति आरंभ की।
- व्यापारिक उद्देश्य से स्थापित फ्रांसीसी कंपनी ने 1742 ई. के बाद फ्रांसीसी भी व्यापारिक लाभ कमाने की तुलना में राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में सक्रिय हो गए। परिणामतः अंग्रेज और फ्रांससियों में युद्ध प्रारम्भ हो गया।

अंग्रेज

- व्यापारिक गातिविधियों के लिए आयी समस्त यूरोपीय कंपनियों में अंग्रेज सर्वाधिक सफल रहे। अंग्रेजों की सफलता का कारण भारत सहित समूचे एशियाई व्यापार के स्वरूप को समझना तथा व्यापार विस्तार में राजनैतिक सैनिक का सहारा लेना।
- 1599 ई. में जॉन मिल्डेनहाल नामक ब्रिटिश यात्री थल मार्ग से भारत आया। 1599 ई. इंग्लैण्ड में एक मर्चेण्ट एडवेंचर्स नामक दल ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अथवा 'दि गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ मजेन्ट्स ऑफ ट्रेनिंग इन टू द ईस्ट इंडीज' की स्थापना की।
- दिसम्बर 1600 ई. में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ टेलर प्रथम ने ईस्ट इंडिया कंपनी को पूर्व के साथ व्यापार के लिए पन्द्रह वर्षों के लिए अधिकार पत्र प्रदान किया। कंपनी का प्रारम्भिक उद्देश्य था 'भू-भाग नहीं बल्कि व्यापार'। पन्द्रह वर्ष बीतने के बाद 1600 ई. में सम्राट जेम्स प्रथम ने कंपनी के व्यापारिक अधिकार को अनिश्चितकाल के लिए बढ़ा दिया।
- अंग्रेजी कंपनी की प्रथम समुद्री यात्रा 1601 ई. जावा, सुमात्रा तथा मोरक्कों के लिए हुई। 1604 ई. में कंपनी भारत की ओर बढ़ी
- 1608 ई. में इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम के दूत के रूप में कैप्टन 'हॉकिंन्स' भारत पहुंचा। जहाँ से वह मुगल सम्राट जहाँगीर से मिलने आगरा गया। हॉकिन्स 'फारसी भाषा' बहुत अच्छा ज्ञाता था। जहाँगीर उससे बहुत अधिक प्रभावित था। जहाँगीर ने उसे आगरा में बसने तथा 400 मनसब एवं जागीर प्रदान किया।

- 6 फरवरी 1613 ई. में जहांगीर की ओर से एक शाही फरमान द्वारा अंग्रेजों को सूरत में व्यापारिक कोठी स्थापित करने तथा मुगल राजदरबार में एक एलची रखने की अनुमति प्राप्त हो गई।
- सर टॉमस रो, ब्रिटेन के राजा जेम्स प्रथम के दूत के रूप में 18 सितम्बर 1615 ई. को सूरत पहुंचा,10 जनवरी 1616 ई. को 'रो' अजमेर में जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ।
- अंग्रेजों ने सूरत में 1613 ई. में सर्वप्रथम अपना कारखाना स्थापित किया। सूरत सतारा बॉम्बे पणजी में ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रारम्भिक वेस्टर्न प्रेसीडेंसी सूरत में थी।
- दक्षिणी में ईस्ट इंडिया कंपनी ने पहला कारखाना 1611 ई. में मसूलीपट्टम और पेटापुली में स्थापित किया।
- 1632 में अंग्रेजों ने गोलकुण्डा के सुल्तान से सुनहरा फरमान प्राप्त किया।
- 1639 ई. में फ्रांसिस ने नामक अंग्रेजों के चंदगिरी के राजा में मद्रास पट्टे पर प्राप्त हो गया यहीं पर अंग्रेजों ने 'फोर्ट सेंट जार्ज' नामक किले की स्थापना की।
- 1658 ई. में औरंगजेब ने अंग्रेजों को बंगाल में व्यापार करने की सुविधा हेतु एक फरमान जारी किया। 1672 ई. में बंगाल के सुबेदार शाइस्ता खा के एक आदेश द्वारा अंग्रजों को मिलने वाली व्यापारिक सुविधा को बहाल कर दिया।
- बंगाल के सुबेदार शाहुशुजा द्वारा दिये गये एक विशेष फरमान द्वारा 1651 ई. में अंग्रजों को 3000 रू. वार्षिक कर देने पर बंगाल में व्यापार का विशेषाधिकार प्राप्त हुआ।
- विलियम हैजेज बंगाल का प्रथम अंग्रेज गवर्नर था।
- कालिकाता, गोविन्दपुर और सुतनाटी को मिलाकर ही आधुनिक कलकत्ता की नींव जॉब चारनाक ने डाली। कालांतर में कलकत्ता में फोर्ट विलियम की नींव पड़ी।
- 1700 ई. में स्थापित फोर्ट विलियम का प्रथम गर्वनर 'सर चार्ल्स आयर' को बनाया गया था इसी समय बंगाल को मद्रास से स्वतंत्र प्रेसीडेंसी बना दिया गया।
- 1717 ई. में जॉन सुर्मन के नेतृत्व में एक ब्रिटिश दूत मंडल कुछ और व्यापारिक रियायतें प्राप्त करने के उद्देश्य से मुगल बादशाह फर्रूखसियर के दरबार में पहुंचा। फर्रुखसियर ने 300 रू. वार्षिक कर अदा करने पर कंपनी को उसके समस्त व्यापार में सीमा शुल्क से मुक्त कर दिया गया। इस फरमान द्वारा कंपनी को कलकत्ता के आस-पास 38 गांवों को खारीदने का अधिकार मिला गया। इसी प्रकार एक के बाद एक घरेलू व बाह्य परिस्थितियों में कंपनी का भारतीय क्षेत्र में अधिकार होता गया।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार

- व्यापार विस्तार के क्रम में अंग्रेजी कंपनी व फ्रांसीसी कंपनी के हित टकराने लगें। परिणामस्वरूप अंग्रेज और फ्रांसीसियों के मध्य तीन कर्नाटक युद्ध हुए।
  प्रथम कर्नाटक युद्ध 1746-1748 ई. – अंग्रेजी कैप्टन बर्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी गवर्नर (मॉरीशस) ला बूर्दने के सहयोग से डुप्ले ने मद्रास के गवर्नर मोर्स को आत्म समर्पण के लिए मजबूर कर दिया, इसे समय अंग्रेज फ्रासीसियों के सामने बिल्कुल असहाय थे।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध के समय कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन ने महफूज खां के नेतृत्व में दस हजार सिपाहियों की एक सेना को फ्रांसीसियों पर आक्रमण के लिए भेजा, कैप्टन पैराडाइज के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने सेंटथोमे के युद्ध में नवाब को पराजित किया।
- इसी बीच यूरोप में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच ऑस्ट्रिया में लड़े जा रहे उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति हेतु 1740 ई. में ऑक्स- ला- शैपेल नामक संधि के सम्पन्न होने पर भारत में भी इन कंपनियों के बीच संघर्ष समाप्त हो गया। मद्रास पुनः अंग्रेजों को मिल गया।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध - 1749-1754 ई. इस युद्ध के समय कर्नाटक के नवाबी के पद को लेकर संघर्ष हुआ, चंदा साहब ने नवाबी के लिए डुप्ले का सहयोग प्राप्त किया, दूसरी ओर डुप्ले ने मुजफ्फर जंग के लिए दक्कन की सूबेदारी का समर्थन किया। अंग्रेजों ने अनवरुद्दीन और नासिरजंग का समर्थन किया।

- चांद साहब ने 1749 ई. में अंबुर में अनवरुद्दीन को पराजित कर मार डाला तथा कर्नाटक में अधिकांश हिस्सों पर अधिकार कर लिया, लेकिन मुजफ्फर जंग दक्कन की सूबेदारी हेतु अपने भाई नासिर जंग से पराजित हुआ। लेकिन 1750 ई. में नासिर की मृत्यु के बाद मुजफ्फर दक्कन का सूबेदार बन गया।
- इस समय दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों का प्रभाव चरम पर था। राबर्ट क्लाइव ने 1751 ई. में 500 सिपाहियों के साथ धारवार पर धावा बोलकर कब्जा कर लिया। फ्रांसीसी सेना ने आत्म समर्पण कर दिया और चांदा साहब की हत्या कर दी गई। फ्रांसीसी सरकार ने डुप्ले को वापस बुलाकर गोदहे को 1 अगस्त 1754 ई. को गवर्नर बना दिया।

तृतीय कर्नाटक युद्ध - 1757-1763 ई. -युद्ध कारण क्लाइव और वॉटसन द्वारा चंद्रनगर पर अधिकार कर लिया गया। युद्ध में अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच वांडीवाश नामक निर्णायक लड़ाई लड़ी गई।

- 22 जनवरी 1760 ई. को लड़े गये वांडीवाश के युद्ध में अंग्रेजी सेना को आयरकूट में तथा फ्रांससीसी सेना को लाली ने नेतृत्व प्रदान किया। इस युद्ध में फ्रांसीसी पाराजित हुए, यही पराजय भारत के पतन की शुरूआत थी। 1761 ई. में पांडिचेरी पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया ।

फ्रांसीसी शक्ति की असफलता के कारण

1. फ्रांसीसी सरकार का असहयोग।
2. कंपनी का सामन्ती स्वरूप और अत्यधिक शाही नियंत्रण।
3. इंग्लैंड की नौ- सैनिक सर्वोच्चता ।
4. फ्रांसीसी सेनापति डुप्ले, बुसी की तुलना में अंग्रेजी सेनापति क्लाइव, लारेंस, आयरकूट आदि की अधिक सूझबूझ।

ईस्ट इंडिया कंपनी और बंगाल विजय

- 18वीं शताब्दी से पूर्व भारत के बंगाल प्रांत की गिनती समृद्धतम सूबों में की जाती थी। बंगाल की समृद्धि ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी सहित अन्य यूरोपीय कंपनियों को आकर्षित किया।
- 1717 ई. में फर्रुखशियर द्वारा एक फरमान ब्रिटिश कंपनी को जारी किया गया। फरमान के द्वारा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल में बिना कर के आयात एवं निर्यात करने की छूट प्रदान की गयी थी। यही फरमान कालांतर में बंगाल के नवाब मुर्शिदकुली खान तथा अंग्रेजों के मध्य संघर्ष का कारण बना।
- मुर्शिदकुली खां स्वतंत्र शासक था, परंतु वह नियमित रूप से मुगल बादशाह को राजस्व भेजता था। मुर्शिदकुली खां ने अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद स्थानांनतरित की। इसके बाद शुजाउद्दीन हुआ। तत्पश्चात सरफराज (1739-40 ई.) तक नवाब बना। 1740 ई. में गिरिया के युद्ध में सरफराज को मारकर अलीवर्दी खां बंगाल का नवाब बना। इसने अपने शासन काल में मुगलों को कर देना बंद कर दिया। इसका उत्तराधिकारी सिराजुद्दौला हुआ।
- सिराजुद्दौला के समय 20 जून 1756 ई. को कालकोठरी की त्रासदी नामक घटना घटी। हॉलवेल के अनुसार नवाब सिराजुद्दौला ने 20 जून की रात में 146 अंग्रेजी व्यक्तियों को एक एक छोटी-सी कोटरी में बंद कर दिया था। अगले दिन सुबह 146 में से केवल 23 व्यक्ति जिंदा बचे थे। इसके बाद प्लासी का युद्ध हुआ।

प्लासी का युद्ध - (23 जून 1757 ई.) -1757ई. को यह युद्ध अंग्रेजों के सेनापति रॉबर्ट क्लाइव एवं बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के बीच हुआ जिसमें नवाब अपने सेनापति मीर जाफर की धोखाधड़ी करने के कारण पराजित हुआ। अंग्रेजों ने मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया। हालांकि ईस्ट इंडिया कंपनी की बढ़ती मांगों को मीर जाफर पूरी न कर सका, तब अंग्रेजों ने 1760 ई. में मीर जाफर के दामाद मीर कासिम को गद्दी पर बैठा दिया।

बक्सर का युद्ध (1764 ई.) -मीर कासिम ने अपनी राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानान्तरित किया। 1764 ई. में बक्सर का युद्ध, मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना तथा अंग्रेजों के बीच हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजी सेनापति हेक्टर मुनरों था।

- 23 अक्टूबर 1764 को बक्सर में तीनों की संयुक्त सेना का सामना कंपनी की सेना से हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजों की विजय हुई। इस युद्ध के बाद इलाहाबाद की संधि हुई।

इलाहाबाद की संधि – 1765 ई. -12 अगस्त 1765 ई. को क्लाइव ने मुगल बादशाह शाहआलम से इलाहाबाद की प्रथम संधि की। जिसकी शर्तें इस प्रकार थी-

1. मुगल बादशाह ने बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी कंपनी को सौंप दी।
2. कंपनी ने अवध नवाब से कड़ा और मानिकपुर छीनकर मुगल बादशाह को दे दिया।
3. एक फरमान द्वारा बादशाह शाहआलम ने नज्मुद्दौला को बंगाल का नवाब स्वीकार कर लिया।
4. कंपनी ने मुगल बादशाह को वार्षिक 26 लाख रूपए देना स्वीकार किया।

- इलाहाबाद की प्रथम संधि सबसे बड़ा लाभ कंपनी को बंगाल, बिहार, उड़ीसा के वैधानिक अधिकार के रूप में मिला। यहीं से अंग्रेजी कंपनी ने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए राजनीतिक हस्तक्षेप की नीति का अनुसरण किया। जिसके परिणाम स्परूप भारत लगभग दो सौ वर्षो तक स्वतंत्रता का संघर्ष करता रहा।

मैसूर विजय – तालीकोटा के निर्णायक युद्ध में विजयनगर साम्राज्य का अंत हो गया। इसी के अवशेषों पर स्वतंत्र राज्य मैसूर का उदय हुआ। मैसूर पर वाड्यार वंश के शासक चिक्का कृष्णराज द्वितीय के शासन काल में दक्कन में मराठों, निजामों, अंग्रेजों और फ्रांसीसियों में अपने-अपने प्रभुत्व को लेकर संघर्ष चल रहा था। 1749 ई. में हैदरअली को सैनिक सेवा में नियुक्त किया गया। 1755 ई. में हैदरअली डिंडीगुल का फौजदार बना। इसी समय मैसूर की राजधानी श्रीरंगपट्टनम पर मराठों के आक्रमण का भय व्याप्त हो गया। परिणामतः हैदरअली राजनीति प्रधान बन गया। मैसूर राज्य के विरोधी गुट ने मराठों को मैसूर पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया। 1760 ई. में हैदर अली, मराठों द्वारा पराजित हुआ, लेकिन शीघ्र ही पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों की पराजय ने हैदरअली को अपनी स्थिति सुधारने का सुअवसर प्रदान किया।

- 1761 ई. तक हैदरअली के पास मैसूर की समस्त शक्ति केन्द्रित हो गई। हैदरअली ने डिंडीगुल में फ्रांसीसियों के सहयोग से 1755 ई. में एक शस्त्रागार की स्थापना की।

प्रथम आंग्ल मैंसूर युद्ध – (1767-1769 ई.)

- यह युद्ध अंग्रेजों की आक्रामक नीति का परिणाम था। हैदरअली ने अंग्रेजों को जवाब देने के लिए मराठा, निजाम की संयुक्त सेना बनाया।
- हैदरअली का पक्ष मजबूत रहा, 1769 ई. अंग्रेजों ने हैदरअली की शर्तों पर मद्रास की संधि की। दोनों पक्षों ने एक दूसरे के जीते हुए क्षेत्रों को छोड़ दिया। प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध समाप्त हुआ।

द्वितीय आंग्ल मैसूर – (1780-1784 ई.)

- 1780 ई. में हैदरअली ने कर्नाटक पर आक्रमण कर द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध की शुरूआत की, उसने अंग्रेज जनरल बेली को युद्ध में पराजित किया।
- 1781 ई. में हैदर का सपना अंग्रेज जनरल आयरकूट से हुआ जिसे वारेन हेस्टिंग्स ने हैदर के विरुद्ध भेजी था।
- आयरकूट ने पोर्टोनोवा के युद्ध में हैदर को परास्त अवश्य किया लेकिन इसका उसे कोई तात्कालिक लाभ नहीं हुआ।
- 1782 ई. में हैदर एक बार फिर अंग्रेजी सेना को पराजित करने में सफल हुआ। लेकिन युद्ध में घायल हो जाने के कारण से 7 दिसम्बर 1782 ई. को हैदरअली की मृत्यु हो गई।
- हैदरअली की मृत्यु के बाद युद्ध के संचालन का भार उसके पुत्र टीपू सुल्तान पर आ गया। इसने अंग्रेजी सेना ब्रिगेडियर मैथ्यूज को 1783 ई. में बंदी बना लिया।
- 1784 ई. तक टीपू ने द्वितीय युद्ध में जारी रखा, अंततः दोनों पक्षों में मंगलौर की संधि सम्पन्न हो गई, जिसके तहत दोनों पक्षों ने एक दूसरे के जीते हुए प्रदेशों को वापस कर दिया।
- मंगलौर की संधि के असंतुष्ट गवर्नर वारेन हेस्टंग्स ने कहा कि यह लार्ड मैकार्टनी कैसा आदमी है, मैं अभी भी विश्वास करता हूँ कि वह संधि के बावजूद भी कर्नाटक को खो देगा।

टीपू सुल्तान – (1782-1799 ई.)

- 1782 ई. में अपने में अपने पिता हैदरअली की मृत्यु के बाद मैसूर की गद्दी पर बैठा, यह राजनीतिक दूरर्शिता में दक्ष था।
- टीपू एक योग्य शासक तथा अरबी, फारसी, उर्दू एवं कन्नड भाषाओं का ज्ञानी था। 1787 ई. में इसने अपने नाम के सिक्के जारी करवाया। टीपू सुल्तान ने श्रृंगेरी के जगद्गुरू शंकराचार्य के सम्मान में मंदिरों के पुर्ननिमाण हेतु धन दान किया। टीपू प्रथम भारतीय शासक था, जिसने अपने प्रशासनिक व्यवस्था में पाश्चात्य, प्रशासन व्यवस्था का मिश्रण किया। फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित टीपू ने श्रीरंगपट्टनम में 'जैकोबिन क्लब' की स्थापना की और उसका सदस्य बना।
- साम्राज्य मजबूती तथा अंग्रेजी नौसेना से मुकाबले के उद्देश्य से टीपू ने जमींदारी व्यवस्था समाप्त कर सीधे रैय्यत से संपर्क स्थापित किया, साथ ही कर मुक्त भूमि, इनाम पर अधिकार कर पॉलिगर के पैतृक अधिकार को जब्त कर लिया। टीपू की बढ़ती शक्ति के कारण अंग्रेजों ने मैसूर पर आक्रमण कर दिया। 1790-1792 ई. के मध्य तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध हुआ।

तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध – (1790-1792 ई)

- इस युद्ध में अंग्रजों ने टीपू के ऊपर आरोप लगाया कि टीपू फ्रांसीसियों से मिलकर अंग्रेजों के विरूद्ध गुप्त समझौता किया है। अंग्रेजों ने मराठों व निजाम के सहयोग से श्रीरंगपट्टनम पर आक्रमण किया, टीपू पराजित हुआ।
- 1792 ई. में अंग्रेजों और टीपू के बीच श्रीरंगपट्टनम की संधि सम्मन्न हुई। मैसूर साम्राज्य आर्थिक रूप से अत्यन्त कमजोर हो गया।

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध-(1799 ई.)

- चतुर्थ मैसूर युद्ध का नेतृत्व अंग्रजों सेना के वेलेजली हैरिस और स्टुअर्ट ने किया 4 मई 1799 ई. को टीपू बहादूरी के साथ लड़ता हुआ मारा गया।
- अंग्रेजों ने मैसूर की गद्दी पर फिर से आड्यार वंश के एक बालक कृष्णराय को दिया। कनारा, कोयम्बटूर और श्रीरंगपट्टनम को अपने राज्य में मिला लिया।
- अंग्रेजों ने मैसूर की गद्दी पर फिर से आड्यार वंश के एक बालक कृष्णराय को बैठा दिया। कनारा, कोयम्बटर और श्रीरंगपट्टनम को अपने राज्य में मिला लिया।

आंग्ल-मराठा संघर्ष

- अंग्रेजों की विस्तावादी नीति के तहत भारतीय राज्य ब्रिटिश रियासत का अंग बनते गए। इसी में मराठा विजय के लिए इतिहास में तीनों आंग्ल-मराठा युद्ध हुए।

प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध(1775-1782 ई.)

- मराठों के आपसी झगड़े तथा अंग्रेजों की महत्वाकांक्षा ने इस युद्ध की पृष्ठभूमि निर्मित कर दी। 1775 ई. में रघुनाथ राव तथा अंग्रेजों के मध्य सूरत की संधि हुई इसी संधि के फलस्वरूप प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ।
- 1782 ई. में सालबाई की संधि (अंग्रेज तथा महादजी सिंधिया के बीच) से प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध समाप्त हो गया। एक दूसरे के विजित क्षेत्रों को लौटा दिया गया। इस संधि का दूरगामी उद्देश्य मराठों और अंग्रेजों के बीच लम्बी शांति स्थापित करना था।

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-1806 ई.)

- 1800 ई. में पूना के मुख्यमंत्री नाना फडनवीस जी की मृत्यु हो गई। सत्ता संघर्ष में बाजीराव द्वितीय ने भागीकर बसीन में शरण ली और 1802 ई. को अंग्रेजों ने बाजीराव में बसीन की संधि कर ली। संधि के तहत –
  1. पेशवा ने अंग्रेजी संरक्षण स्वीकार कर भारतीय तथा अंग्रेजी पदातियों की सेना को पूना में रखना स्वीकार किया।
  2. पेशवा ने सूरत नगर कंपनी को दे दिया।
  3. पेशवा ने निजाम से चौथ प्राप्त करने का अधिकार छोड़ दिया और अपने विदेशी मामले कंपनी के अधीन कर दिए।

- संधि के विरोध में भोसले ने अंग्रेजों को चुनौती दी। विवश होकर 1803 ई. में अंग्रेजों से देवगांव की संधि की।
- सिंधिया ने 1803 ई. में सूरजी अर्जन गांव की संधि से गंगा तथा यमुना क्षेत्र कंपनी को दे दिया।
- 1804 ई. में होल्करों व कंपनी के मध्य युद्ध में कंपनी की विजय हुई। 1804 ई. होल्करों ने विवश होकर रामपुर घाट की संधि की। इस प्रकार द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध समाप्त हो गया।

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1818 ई.)

- इस युद्ध का तृतीय व अंतिम चरण लॉर्ड हेस्टिंग्स के आने पर प्रारम्भ हुआ। हेस्टिंग्स ने पिण्डारियों के विरुद्ध अभियान किया जिससे मराठों को चुनौती मिली। अंग्रेजों सेना व पेशवा युद्ध में आमने सामने हो गए। पेशवा की पराजय हुई और बाजीराव का पूना प्रदेश अंग्रेजी राज्य में विलय कर लिया गया।

पंजाब विजय

- 1839 ई. में रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद उसके अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह के सिंहासना रोहन के बीच 1843 ई. तक तीन अयोग्य उत्तराधिकारी क्रमशः खड़क सिंह, नैनिहाल सिंह और शेर सिंह ने शासन किया।
- 1843 ई. में महाराजा रणजीत सिंह के अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह के समय अंग्रेजों ने पंजाब पर आक्रमण किया। परिणामतः दो आंग्ल-सिख युद्ध हुए।

प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1845-1846 ई.)

- इस युद्ध के समय लॉर्ड हार्डिंग गवर्नर-जनरल था। सिख सेना का नेतृत्व लाल सिंह ने किया अंग्रेजों से पराजित हुई। लौहार की संधि 8 मार्च 1846 को सम्पन्न हुई। संधि की शर्तें इस प्रकार थी-

1. सिखों ने सतलज नदी के दक्षिण ओर के सभी प्रदेशों को अंग्रेजों को सौंप दिया।
2. लाहौर दरबार पर 1.5 करोड़ का युद्ध का हर्जाना थोपा गया।
3. सिख सेना में कटौती कर दी गई।
4. एक ब्रिटिश रेजीडेंट को लाहौर में नियुक्त किया गया।

द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1848-1849 ई.)

- इस युद्ध के समय भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौली थे। 13 जनवरी 1849 ई. को चिलियानवाला का युद्ध हुआ जो अनिर्णीत समाप्त हो गया।
- युद्ध के बाद डलहौजी ने गफ के स्थान पर चार्ल्स नेपियर को प्रधान सेनापति बनाया। नेपियर ने सिख सेना को 21 फरवरी 1849 ई. को 'गुजरात के युद्ध' में बुरी तरह पराजित किया। 30 मार्च 1849 को चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में पंजाब को अंग्रजी राज्य में मिला लिया गया।
- महाराजा दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने 5 लाख रूपए का वार्षिक पेंशन पर रानी झिदंल के साथ इंग्लैंड भेज दिया।

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य – रणजीत सिंह के राज्य में श्रीनगर सम्मिलित था। रणजीत सिंह सुकरचकिया मिसल से संबंधित थे। रणजीत सिंह का राजधानी लहौर थी।

- ईश्व की इच्छा थी की मैं सब धर्मों को एक निगाह से देखूं, इसीलिए उसने दूसरी आंख ले ली' यह कथन महाराजा रणजीत सिहं का था।
- सिख राज्य का अंतिम राजा दिलीप सिंह था। दिलीप सिंह का निधन 23 अक्टूबर 1893 ई. को पेरिस में हुआ।
- पंजाब के विलय के पश्चात पंजाब पर शासन करने के लिए तीन सदस्यों की परिषद बनायी गई। जिसमें सर हेनरी लॉरेंस अध्यक्ष व जॉन लॉरेंस एवं ग्रेविल मानसेल इसके सदस्य थे।
- टीपू सुल्तान ने ब्रिटिश सेना को 1780 ई. में पोल्लीलुर में हराय था।
- अंग्रेजों से युद्ध करते हुए 1799 ई. में टीपू सुल्तान मारा गया।

- हैदराबाद के निजाम ने ईस्ट इंडिया कंपनी के कंट्रौल के खिलाफ बगावत नही की थी।
- टीपू सल्तान ने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में बनाई थी।
- भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक लॉर्ड रॉबर्ड कलाइव था। क्लाइव को 'स्वर्ग से भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व का प्रारम्भ हुआ। प्लासी का युद्ध 1757 ई. से भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व का प्रारम्भ हुआ। प्लासी का युद्ध मैदान का शासक शाहआलम द्वितीय था।
- बक्सर की लड़ाई के समय बंगाल का नवाब मीर जाफ़र था। 1765 ई. में बक्सर युद्ध के बाद शाहआलम द्वितीय ने ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल की दीवानी प्रदान की। 1765 ई. में दीवानी प्रदान किए जाने के बाद ब्रिटिश सबसे पहले खासी पर्वतीय जनजाति के संपर्क मे आए।
- वांडीवाश का युद्ध 1760 ई. ब्रिटिश व फ्रेंच कंपनी के मध्य हुआ।
- भारत में अंग्रेजों का सर्वाधिक विरोध मराठों द्वारा किया गया।
- इलहाबाद की संधि 1765 ई. के समय मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय ने ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा दीवान प्रदान की। इलाहाबाद की संधि 1765 के बाद रॉबर्ट क्लाइव ने मुर्शिदाबाद का उप-दीवान मुहम्मद रजा खान को नियुक्त किया गया।
- 1759 ई. को अंग्रेजों ने 'युद्ध' में डचों को पराजित कर डचों का अंत कर दिया।